

हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊँ किंवित भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूँगा। -बाल्तेपर



मेरिट पर क्यों नहीं?

नागरिकता जैसे महत्वपूर्ण मुद्रे पर धर्म की बजाय मेरिट के आधार पर निर्णय लेना चाहिए। जरूरी है कि इसमें सभी को विश्वास में लिया जाए।

Nगरिकता संशोधन विवेयक के मसोदे की केन्द्रीय कैबिनेट की हरी झड़ी मिल गई है। भाजपा सरकार ने छिले राज्यसभा में इसे लोकसभा में पास करा लिया था किंतु राज्यसभा में पेश होने से लोकसभा भाग हो गई। ऐसे में विवेयक का अस्तित्व ही खबर हो गया। अब वापस इसे लोकसभा में किंवित राज्यसभा में पेश किया जाएगा। सरकार की कोशिश है कि इसे शोताकालन सभा में ही पारित करा लिया जाए। दरअसल, नागरिकता संशोधन विवेयक का अस्तित्व ही उदाहरण है। इसमें अकान्तिनान, बांगलादेश और पाकिस्तान से आप हिंदू, सिंह, औदृ, ईरानी, जैन और पारसी धर्मों के लोगों के लिए इसका नियम समल बनाना है। वर्तमान में भारतीय नागरिकता याने के लिए कम 11 साल तक वैध दस्तावेजों के साथ भारत में रहना अनिवार्य है। प्रस्तावित कानून में संशोधन विवेयक का बाद यह साल तक रह जाएगी। सभी शब्दों में तो इन तीन दोषों के गैर मुस्लिम राजनीतिक दलों के विरोध की भागी रही हैं कि सरकार नागरिकता कानून को किसी धर्म के चापसे से बचा देंगे।

विपरीत दोनों का तरफ है कि सरकार अपनी राजनीती साधने के लिए धार्मिक आधार पर नागरिकता दे रही है, जो सविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन है। इसमें सभी को समानता की अधिकार मिला होता है। सबाल यह भी है कि यह विवेयक दोनों सदनों से पास होता है तो असम में लागू नेशनल सिटीजन रिजिस्टर (एनआरसी) का भविष्य क्या रह जाएगा। संशोधन का बाद यह भी है कि यह विवेयक दोनों सदनों से आप हिंदू, सिंह, औदृ, ईरानी, जैन और पारसी धर्मों के लोगों के लिए इसका नियम यानी आपस करना होता है। कुछ राजनीतिक दलों के विरोध की बजाए भी यही है कि सरकार नागरिकता कानून को किसी धर्म के चापसे से बचा देंगे।

विपरीत दोनों का तरफ है कि सरकार नागरिकता कानून को लिए कम 11 साल तक वैध दस्तावेजों के साथ भारत में रहना अनिवार्य है। प्रस्तावित कानून में संशोधन विवेयक का बाद यह साल तक रह जाएगी। सभी शब्दों में तो इन तीन दोषों के गैर मुस्लिम राजनीतिक दलों के विरोध की भागी रही हैं कि सरकार नागरिकता कानून को किसी धर्म के चापसे से बचा देंगे।

प्रयाग शुक्रल
साहित्यकार



कवि-कथाकार और
कला समीक्षक।
‘गीतांजलि’ के
अनुवादक। अनेक
पत्रिकाओं के संपादक
रहे हैं।

आखिरकार
राजस्थान की
कठपुतलियां हों या
गुजरात की। स्वयं
उनकी दुनिया हों या
गुजरात की। स्वयं

कितनी बड़ी रही है।

और कब नहीं रहे

हैं, छत्तीसगढ़ी
'नाचा' जैसे रूप भी
कई प्रदेशों में जिन्हें
आधुनिक काल में

हवीब तनवीर जैसे

रंगकर्मियों ने नए

रूपों में ढाला है या

जिनका उपयोग

नागर रूपों वाली

आधुनिक या

समकालीन

अभिव्यक्तियों के

लिए सफलतापूर्वक

किया है।

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,
वहां व्यवसायियों को जीमीन दी
जाती है। किसीनो को वह नहीं
मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

-राहुल गांधी, नेता कांग्रेस

जहां भी भाजपा की सरकार है,

वहां व्यवसायियों को जीमीन दी

जाती है। किसीनो को वह नहीं

मिलता जो वे चाहते हैं। जहां भी

कोशिस तो मात्र है और पैकिस

कर देता है। और भाजपा

स्टेट और दूसरे दोषों के

लिए भी यही वादा करता है।

समस्या उतना ही परेशान करेगी जितना उसे स्वयं पर हाथी करेंगे

नागरिकता का निर्धारण

केंद्रीय कैबिनेट की ओर से नागरिकता संशोधन विधेयक को मंजूरी मिलने के साथ ही उस पर बहस तेज हो जाएगी स्थानाभाविक है, जिसकी कई विपक्षी दल पहले से ही उसका विरोध कर रहे हैं। इसी विवेष के काम में दल सकार के पहले कार्यकाल में इस विधेयक को संसद की मंजूरी मिलने की साथ ही उस पर बहस तेज हो जाएगी स्थानाभाविक है, जिसकी कई विपक्षी दल पहले से ही उसका विरोध कर रहे हैं। इसी विवेष के काम में दल सकार के पहले कार्यकाल में इस विधेयक को संसद की मंजूरी देशों और खासकर पाकिस्तान, अफगानिस्तान और वालादेश के अल्पसंख्यक यानी हिंदू, सिख, जैन, बौद्ध, ईस्टांड, पासी ही कुछ शर्तों के साथ भारत की नागरिकता पाने के अधिकारी होंगे। विपक्षी दलों के विवेष का आधार यह है कि आधिकार पासी देशों के मुसलमानों को वह विवेष कर्त्ता है जो तो मूसलम बहुल देश है और वहाँ मुसलमान नहीं अन्य पंथों के लोग प्रताड़ित होते हैं। इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता, लेकिन इसी के साथ यह सवाल खड़ा होता है कि क्या बाहरी देशों के लोगों को नागरिकता देने के प्रस्तावित नियम भारत की वसुष्ठृत कुटुंबकम और सर्वधर्म समानार्थी अवधारणा के अनुकूल होंगे? यह सवाल उतने वाले यह भी रखांकित करते हैं कि भारत तो वह देश है जिसने दुनिया भर के लोगों को अपनाया। यह बिल्कुल सही है, लेकिन बायं इसकी अनुदेशी करी दी जाए कि असम और अन्य पूर्वोत्तर राज्यों में बांसुरी देश से आए करोड़ों लोगों ने किस तरह वहाँ के सामाजिक और राजनीतिक माहौल को बदल दिया है?

इसकी अनुदेशी नहीं हो सकती कि असम में केवल 19 लाख चुपचापियों की लोगों हो पाने के कारण राष्ट्रीय नागरिकता रजिस्टर का विवेष हो रहा है। इस विवेष की वजह होती है कि बाहरी लोगों के कारण राष्ट्रीय संस्कृति के लिए खतरा पैदा हो गया है। क्या इस खतरे को ओझल कर दिया जाए? क्या आप भारत के पास इन्हें संसाधन हैं कि जो भी बाहर से आए उसे वहाँ की नागरिकता दे दी जाए? आज तो कई भी और वहाँ तक कि कम आवादी और भारत से कहीं अधिक समर्थ देने भी ऐसा नहीं करते। यह सही है कि अगर पासी देशों के अल्पसंख्यक प्रताड़ित होते हैं तो वे भारत में हाशमद होते हैं, लेकिन विश्व समुदाय के बीच हमें देश के तौर पर भी नहीं दिखाना चाहिए जो उत्तरास परदात के आधार पर बाहरी लोगों को शरण देने वाले न देने का फैसला करता है। बेहतर हो कि पक्ष-विपक्ष ऐसे किसी उपाय वाले नागरिकता संशोधन विधेयक पर सहमत हों जिसमें जागरूकता के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की भी रक्षा हो। इस क्रम में उठें इसे लेकर सरकार रहना ही होगा कि उदारता आत्मघात का रूप न लेने पाए।

जरा सोचिए

उन्नीस साल का हो चुका अपना झारखंड बौद्ध विधानसभा चुनाव के रूप में लोकतंत्र का उत्तरवाची का दूसरा तो यह चुनाव युवावस्था की दलील पर खड़े हैं इस राज्य के भविष्य के लिए काफी मायने रखता है।

वैसे भी जी जरा घर का बच्चा 19 साल का हो जाता है तो यह परिवार की चिंता वही होती है कि उसे कैसे सही रस्ते पर आये बढ़ावा जाए, ताकि उसका विषय सुनहरा हो सके। यही बात झारखंड के साथ भी लागू होती है। प्रधानमंत्री नंद्रो मोदी की भी एक दिन पहले अपना झारखंड दौरे के दैरान सर्वानिक सभा में ऐसे रेखांकित किया था। ऐसे में राज्य के लोगों का यह बाबन के बायं है कि वे झारखंड को सही दिशा में ले जाने के लिए मतदान के इस अवसर का इस्तेमाल करें।

राज्य के लोगों का यह पावन कर्तव्य है कि वे झारखंड को सही दिशा में ले जाने के लिए मतदान के सुअवसर का इस्तेमाल करें। जितना ज्यादा मतदान होगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो जाएगा, उतनी ही अधिक लोकतंत्र की जड़ें मजबूत होंगी और उतनी मजबूती से झारखंड में सियासी

परिवर्तन की ओर आयी होगी। जितना ज्यादा मतदान हो ज

विवाद का विधेयक

केंद्रीय कैबिनेट ने बधावर को नागरिकता संशोधन विधेयक को मंजूरी दे दी। छिली लोकसभा में आया यह बिल उत्थाका कार्यकाल ख़बर होने के कारण निष्प्रभावी हो गया था। अब इसे जल्द ही संसद में प्रस्तुत किए जाने को संभवाना है। यह विधेयक नागरिकता अधिनियम 1955 के प्रावधानों को बदलने के लिए पेश किया गया है और इसमें अफगानिस्तान, बांगलादेश और पाकिस्तान से आए बिल, सिख, जैन, पारसी और इंसाई धर्मों के प्रवासियों के लिए भारतीय नागरिकता हासिल करने के नियम को आसान बनाया गया है। अपी किसी विदेशी नागरिकों को भारत की नागरिकता हासिल करने के लिए पेश किए 11 वर्षों से लगातार यहाँ रहना अनिवार्य है। विधेयक में ऊपर बताए गए लोगों के लिए इस अवधि को एक से 6 साल कर दिया गया है। नागरिकता कानून में बदलाव के इस प्रस्ताव का प्रौत्तर यज्ञों में कोड विधेयक हो रहा है।

कारण यह कि इसमें अवैध घुसपैठ को धर्म के आधार पर बनाए की बात है। विधेयक के अनुसार बांगलादेशी मुसलमान तो अवैध माना जाएगा पर बांगलादेशी हिंदू देश का वैध नागरिक हो जाएगा। असम के लोगों को सदै है कि यह संशोधन एनआरसी से पैदा हुए समस्ताओं को सुलझाने के बजाय और उलझाने वाला है। उनकी लाई असम से घुसपैठों को जारी की रही है और उन्होंने यहाँ से घुसपैठिया हिंदू मुसलमान या ईसाई नहीं, महज एक घुसपैठिया है। 1980 के दशक में ऑल असम स्टेडेंस यूनियन (आसु) की अगुआई में हुए छात्रों के आंदोलन में यह मुद्दा उन्होंने बढ़ा देमाने पर उठाया। 1985 के असम समझौते के दो दशक बाद अंततः 2005 में केंद्र, राज्य सरकार और आसु के बीच अपीली नागरिकों को कानूनी दस्तावेजीकरण पर सहमति बनी और अदालत के हस्तक्षेप से इसका एक व्यवस्थित रूप सापेक्ष होता है। 1971 के बाद आए सभी शरणार्थियों को वापस भेजने का नियन्य हुआ। लोकने पेशी लगता है कि मौजूदा केंद्र सरकार की रुचि सिर्फ मूर्खलम शरणार्थियों को चिह्नित करने और बाकियों को अपना बोट बैंक मानकर यहाँ बसाए रखने में है। यही बजह है कि बीजेपी के अधिकारी नेताओं ने भी इस बिल के खिलाफ कमर कस रखी है और असम के अन्य देशों को सम्मुखीनी भी बोल दिया है। इतिहास का अनान लोक सपर तय करने के क्रम में हाँ एक ऐसे क्रमानुसार पर उत्तर तथा यहाँ तो उन्हें यकीन नहीं हुआ। ऐसे में उन्हें तस्वीरों के नीचे लिखी क्रैडिट लाइन दिखानी पड़ी।



सिटिजनशिप अमेंडमेंट बिल

Join Telegram Channel ↴

➲ TARGETGOVTJOBS [[Https://t.me/TargetGovtJobs](https://t.me/TargetGovtJobs)]

Special :- Daily Update  Newspaper,  Editorial,  Today's History,  Air & BBC News,  RSTV,  The Hindu vocabulary,  Imp. NewsClips,  StudyIQ Video,  Daily, Weekly & Monthly current affairs Magazine,  Dr. Vijay Agarwal Audio Lectures,  Job update [Employment News Weekly], etc...

■■■ E BOOKS ■■■ [[Https://t.me/Edu_Books](https://t.me/Edu_Books)]

Special :- Get all important E-Books [NCERT Books, Subject Wise Books, Hand Written notes, Coaching Classes Notes], Weekly & Monthly Current Affairs Magazine, Exam Test Series, Job update, Employment News, Other Magazine etc.... [Medium :- Hindi & English]

■■■ E-PAPER & MAGAZINE ■■■ [[Https://t.me/NewspapersToday](https://t.me/NewspapersToday)]

Special :- Daily Update Newspaper [Hindi & English Language], Magazine, Employment News, Job update,  Air & BBC News, Etc....

 THANKS